3 **नवम्बर**, 2024

पिन्तेकुस्त के बाद 24**वाँ रविवार**

सबसे बड़ी आज्ञा

मीका 6.2-8

भजन 24.1-6

1 यूहन्ना 4:16**ख**-21

मरकुस 12:28-34

मुख्य वचन: "**और तू प्रभु अपने परमेश्वर से अपने सारे मन से, और अपने सारे प्राण से, और अपनी सारी बुद्धि से, और अपनी सारी शक्ति से प्रेम रखना।**" – मरकुस 12:30

आज जब हम **पिन्तेकुस्त** के बाद 24वें रविवार को एकत्र हुए हैं, तो हम **हमारे मनों** को **मसीह विश्वास** में एक गह**री** और केंद्रीय शिक्षा की ओर मोड़ते हैं - **अर्थात् सबसे बड़ी आज्ञा की ओर**। **मरकुस** 12:28-34 में यीशु द्वारा दी गई यह आज्ञा, परमेश्वर का अनुसरण करने के अर्थ का सार प्रस्तुत करती है। **यह** परमेश्वर के प्रति प्रेम और पड़ोसी के प्रति प्रेम **के लिए** प्रत्येक **मसीही** प्रयास का आधार है, जो हमारे जीने, सेवा करने और गवाही देने के तरीके को आकार देता है। आज, आइए हम इस **सबसे बड़ी आज्ञा** की गहराई का पता लगाएँ, इसे **हमारे मनों** से बात करने दें और अपने जीवन को प्रेरित करें। यह आज्ञा हमारे पूरे अस्तित्व को परमेश्वर के हृदय और उसके उद्देश्यों के साथ जोड़ने की **बुलाहट** है, एक ऐसा **बुलाहट,** जो हमें और हमारे आस-पास के लोगों को

बदल सकती है। हम मीका, भजन, 1 यूहन्ना और मरकुस में हमारे पठ्न से चार प्रमुख बिंदुओं के माध्यम से इस विषय की जाँच करेंगे।

1. न्याय और दया **की बुलाहट** – मीका 6:2-8

भविष्यद्वक्ता मीका एक गहरा संदेश देता है **कि**: **परमेश्वर** हमसे जो चाहता है**,** वह खोखली रस्में नहीं**,** बल्कि **परमेश्वर** के सामने ईमानदारी, न्याय, दया और विनम्रता का जीवन है। मीका 6:8 में, **भविष्यद्व**क्ता कहता है **कि**, "**हे मनुष्य**, **वह तुझे बता चुका है कि अच्छा क्या है**; **और यहोवा तुझ से इसे छोड़ और क्या चाहता है**, **कि तू न्याय से काम करे**, **और कृपा से प्रीति रखे**, **और अपने परमेश्वर के साथ नम्रता से चले**?" **सबसे बड़ी आज्ञा** केवल भावनाओं तक सीमित नहीं है, बल्कि **गतिविधि करने** के **द्वारा** व्यक्त की जाती है। जब हम अपने पूरे अस्तित्व के साथ **परमेश्वर** से प्रेम करते हैं, तो हम **संसार** को उसकी आँखों से देखना शुरू करते हैं। हम दूसरों की जरूरतों को देखते हैं, हम **सताए हुओं** की **पुकारों को** सुनते हैं, और हम करुणा के साथ कार्य करने के लिए प्रेरित होते हैं। **हम में से परमेश्वर** का प्रेम बाहर की ओर बहता है, जो हमें न्याय के लिए काम करने और सभी पर दया करने के लिए प्रेरित करता है। असमानता और पीड़ा से भरे **इस संसार** में, न्याय और दया **की** यह **बुलाहट** हमें वास्तविक, **बदलने वाले** तरीकों से प्रेम को **स्पर्शनीय** रूप देने की चुनौती देती है। एक पड़ोसी की कल्पना करें**,** जो कठिन समय से गुज़र रहा हो। प्रेम दिखाने का मतलब दया **से भरे एक** शब्द से कहीं अधिक हो सकता है; इसमें भोजन उपलब्ध कराना, वित्तीय **जरूरतों** में मदद करना या **एक व्यक्ति** की बात सुनना शामिल हो सकता है। सच्चा **प्रेम**, जो परमेश्वर के न्याय पर आधारित है, हमेशा व्यावहारिक होता है।

2. परमेश्वर की प्रभुता को पहचानना – भजन 24:1-6

भजन 24 एक शक्तिशाली **यादगारी** के साथ शुरू होता है: "**पृथ्वी और जो कुछ उस में है यहोवा ही का है**, **जगत और उस में निवास करनेवाले भी**" (भजन 24:1)। यह घोषणा इस बात पर जोर देती है कि सब कुछ परमेश्वर का है - हमारा जीवन, हमारी संपत्ति और सारी सृष्टि। परमेश्वर की प्रभुता को पहचानना **सबसे बड़ी आज्ञा की नींव** है। अपने पूरे **प्राण**, आत्मा, मन और शक्ति से परमेश्वर से प्रेम करने के लिए, हमें यह स्वीकार करना चाहिए कि व**ही सारे** जीवन का स्रोत और पालनकर्ता है। यह जागरूकता हमें विनम्र **बनाए** रखती है और हमारे **मनों** को आराधना के लिए खोल **दे**ती है। भजनकार **कहता** है **कि**, "**यहोवा के पर्वत पर कौन चढ़ सकता है**? **और उसके पवित्रस्थान में कौन खड़ा हो सकता है**? **जिसके काम निर्दोष और हृदय शुद्ध है**..." (भजन 24:3-4)। परमेश्वर से प्रेम करने के लिए हृदय की शुद्धता और उसकी पवित्रता के प्रति **समर्पण** की आवश्यकता यह पहचानते हुए होती है कि उसके प्रति हमारा प्रेम हमारे जीवन में **शेष** स**भी** चीजों को आकार देता है। एक ऐसे व्यक्ति के बारे में सोचें जो प्रकृति **को देखते हुए** समय बिताता है, **वह** परमेश्वर की सृष्टि की सुंदरता को देखता है। यह अनुभव अक्सर **आश्चर्यचकित होने** की भावना **को** जगाता है, हमें **परमेश्वर** की महानता की याद दिलाता है और हमें ऐसा जीवन जीने के लिए प्रेरित करता है**,** जो उ**स**की **सृष्टि** का सम्मान करता है। जब हम **संसार** को **परमेश्वर** की तरह देखते हैं, तो हम सृष्टिकर्ता और उनकी **सृष्टि** दोनों के लिए प्रेम में बढ़ जाते हैं।

3. सिद्ध प्रेम भय को दूर करता है – 1 यूहन्ना 4:16**ख**-21

1 यूहन्ना 4 में, हमें याद दिलाया गया है कि, "**परमेश्वर प्रेम है**, **और जो प्रेम में बना रहता है वह परमेश्वर में बना रहता है**, **और परमेश्वर उसमें बना रहता है**" (1 यूहन्ना 4:16**ख**)। यह **अनुच्छेद** परमेश्वर के प्रेम की **बदलने वाली सामर्थ्य** पर जोर देता है। जब हम परमेश्वर के प्रेम में जीते हैं, तो हमारे **मनों** में **भय** के लिए कोई जगह नहीं होती। "**प्रेम में भय नहीं होता**, **वरन् सिद्ध प्रेम भय को दूर कर देता है**..." (1 यूहन्ना 4:18)। **भय या** डर अक्सर हमें दूसरों से पूरी तरह **प्रेम** करने या विश्वास के साहसिक कदम उठाने से रोकता है। हालाँकि, जब हम वास्तव में समझते हैं कि **परमेश्वर** हमसे **प्रेम** करता है, तो हमारी असुरक्षाएँ और चिंताएँ कम हो जाती हैं। यह **प्रेम** वह आधार बन जाता है**,** जिस पर **खड़े होकर** हम अपने पड़ोसियों से **प्रेम** करते हैं। हमें न केवल उन लोगों से **प्रेम** करने के लिए **बुलाया गया** है**,** जिन्हें **प्रेम** करना आसान **होता** है, **वरन्** उनसे भी जो हमें चुनौती देते हैं। यह **क्रान्तिकारी**, निडर प्रेम **सबसे बड़ी आज्ञा** के मूल में **दिखाई देता** है। ऐसी स्थिति के बारे में सोचें**,** जहाँ डर **आपको** किसी को दूसरे की मदद करने से रोक सकता है। शायद हम **जरूरत** में किसी **अनजान व्यक्ति** की मदद करने या किसी ऐसे व्यक्ति के लिए बोलने में संकोच करते हैं**,** जिस**के बोलने का कोई मूल्य** नहीं है। लेकिन हमारे **भीतर परमेश्वर** के प्रेम के साथ, हम कार्य करने का **हियाव** पाते हैं, **क्योंकि** हर **एक** व्यक्ति को **परमेश्वर के स्वरूप और समानता** में बनाया गया और **प्रेम** के योग्य है।

4. परमेश्वर और पड़ोसी के प्रति संपूर्ण **मन से** प्रेम – मरकुस 12:28-34

अंत में, हम **मरकुस** 12 में यीशु के **ही** शब्दों पर आते हैं। जब **उससे** पूछा गया कि सबसे बड़ी आज्ञा कौन सी है, तो यीशु ने उत्तर दिया, "**'और तू प्रभु अपने परमेश्वर से अपने सारे मन से**, **और अपने सारे प्राण से**, **और अपनी सारी**

बुद्धि से, और अपनी सारी शक्ति से प्रेम रखना।' और दूसरी यह है, 'तू अपने पड़ोसी से अपने समान प्रेम रखना'" (**मरकुस** 12:30-31)। यीशु इस बात पर जोर दे**ता** है कि ये दो आज्ञाएँ **एक दूसरे से अलग नहीं** हैं। परमेश्वर के प्रति सच्चा प्रेम हमेशा हमारे पड़ोसी के प्रति प्रेम के साथ होता है। इस पूरे **मन** से किए गए प्रेम का अर्थ अपने हर हिस्से **में** - **अपनी** भावनाएँ, बुद्धि, इच्छा और शक्ति को शामिल करना **है**। परमेश्वर से इस तरह प्रेम करने से हम दूसरों को जिस तरह देखते हैं**,** वह बदल जाता है और हमें उ**स**की सेवा करने के लिए मजबूर करता है। यीशु **उस** शास्त्री से कह**ता** हैं कि यह प्रेम "**सारी** होमबलि**यों** और बलिदानों से कहीं बढ़कर है" (**मरकुस** 12:33)। **यह केवल धार्मिक अनुष्ठान के बारे में नहीं है, बल्कि प्रेम द्वारा परिवर्तित जीवन के बारे में है। एक अच्छे सामरी की कहानी पर विचार करें, जिसने मार्ग के किनारे पड़े हुए एक घायल व्यक्ति को देखा और दया से भरकर उसकी मदद करने का निर्णय लिया। उसने आने वाले खर्चे या असुविधा के बारे में नहीं सोचा; उसने बस प्रेम में उत्तर दिया। जब हम सबसे बड़ी आज्ञा का पालन करते हैं, तो हम अच्छे सामरी की तरह बन जाते हैं, और दूसरों के प्रति अपने कार्यों को प्रेम के अनुसार चलाए चलते हैं।**

निष्कर्ष

सबसे बड़ी आज्ञा पालन करने के लिए एक नियम से कहीं अधिक है - यह **परमेश्वर** और एक दूसरे के साथ संबंध बनाने **की बुलाहट** है, जो हमारे जीवन के हर पहलू को बदल देता है। यह हमें याद दिलाता है कि हमारा विश्वास सक्रिय है, **यह** न्याय, दया, विनम्रता और निडर प्रेम के माध्यम से व्यक्त किया जाता है। यह हमें सभी लोगों को अपने पड़ोसियों के रूप में देखने और

करुणा और दयालुता के साथ **उत्तर** देने की चुनौती देता है। आइए हम अपने पूरे **मन**, आत्मा, **प्राण** और **शक्ति के साथ परमेश्वर** से **प्रेम** करने और अपने पड़ोसियों से **अपने आप से प्रेम** करने **की तरह अपने आप** को फिर से **समर्पित** करें। जब हम ऐसा करते हैं, तो हम **संसार** में **परमेश्वर** के प्रेम के प्रतिबिंब बन जाते हैं, **और** अपने शब्दों, कार्यों और जीवन के माध्यम से सुसमाचार को जीते हैं।

प्रार्थना

हे दयालु परमेश्वर, हम आपको उस प्रेम के **वरदान** के लिए धन्यवाद देते हैं**,** जो आपने हमारे **मनों** में डाला है। हमें अपने पूरे **मन**, आत्मा, **प्राण** और शक्ति से आपसे प्रेम करना सिखाएँ। हमें प्रत्येक व्यक्ति को अपना पड़ोसी **की मदद करने के लिए देखने में सहायता दें**, **जो कि** करुणा, दया और न्याय **प्राप्त करने के योग्य है**। आपका प्रेम हमारे भीतर के सभी भय को दूर कर दे, और हम इस **संसार** में आपके प्रकाश के प्रतिबिंब के रूप में जिएँ। हे प्रभु, **सबसे बड़ी आज्ञा** के **पथ** पर **चलने के लिए** हमारा मार्गदर्शन करें, ताकि हम आपके प्रेम को उन सभी तक पहुँचा सकें**,** जिनसे हम मिलते हैं। हमें **दृढ़** करें, हमें अपनी आत्मा से भरें, और हमें अपने **विश्वासयोग्य** सेवकों के रूप में जीने के लिए **इस संसार में** भेज **दें**। यीशु के **बहुमूल्य** नाम में, हम प्रार्थना करते हैं। आमीन।